**शिव ताण्डव स्तोत्रं**

**जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले**

**गलेऽवलम्ब्य लम्बितां(म्) भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।**

**डमड् – डमड् – डमड् – डमन् – निनादवड् डमर्वयं**

**चकार चण्डताण्डवं(न्) तनोतु नः(श्) शिवः(श्) शिवम् ॥ 1 ॥**

**जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-**

**विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।**

**धगद् – धगद् – धगज् – ज्वलल् – ललाटपट्टपावके**

**किशोरचन्द्रशेखरे रतिः(फ्) प्रतिक्षणं(म्) मम ॥ 2 ॥**

**धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-**

**स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।**

**कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि**

**क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ 3 ॥**

**जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-**

**कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।**

**मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे**

**मनो विनोदमद्भुतं(म्) बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ 4 ॥**

**सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-**

**प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।**

**भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः**

**श्रियै चिराय जायतां(ञ्) चकोरबंधुशेखरः ॥ 5 ॥**

**ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-**

**निपीतपंचसायकं(न्) नमन्निलिंपनायकम् ।**

**सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं(म्)**

**महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ 6 ॥**

**करालभालपट्टिका – धगद् – धगद् – धगज् – ज्वलद् -**

**धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।**

**धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-**

**प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ 7 ॥**

**नवीनमेघमण्डली- निरुद्धदुर्धरस्फुरत्-**

**कुहूनिशीथिनीतमः(फ्) प्रबन्धबन्धुकन्धरः ।**

**निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः**

**कलानिधानबन्धुरः(श्) श्रियं(ञ्) जगद्धुरन्धरः ॥ 8 ॥**

**प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-**

**वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् I**

**स्मरच्छिदं(म्) पुरच्छिदं(म्) भवच्छिदं(म्) मखच्छिदं(म्)**

**गजच्छिदान्धकच्छिदं(न्) तमंतकच्छिदं(म्) भजे ॥ 9 ॥**

**अखर्वसर्वमलाकलाकदम्बमञ्जरी-**

**रसप्रवाहमाधुरी- विजृम्भणामधुव्रतम् ।**

**स्मरान्तकं(म्) पुरान्तकं(म्) भवान्तकं(म्) मखान्तकं(म्)**

**गजान्तकान्धकान्तकं(म्) तमन्तकान्तकं(म्) भजे ॥ 10 ॥**

**जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-**

**द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालफालहव्यवाट् ।**

**धिमिद् – धिमिद् – धिमिद् – ध्वनन् - मृदङ्गतुङ्गमङ्गल -**

**ध्वनिक्रमप्रवर्तित -प्रचण्डताण्डवः(श्) शिवः ॥ 11 ॥**

**दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्-**

**गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः(स्) सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।**

**तृणारविन्दचक्षुषोः(फ्) प्रजामहीमहेन्द्रयोः**

**समप्रवृत्तिकः(ख्) कदा सदाशिवं(म्) भजाम्यहम् ॥ 12 ॥**

**कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्**

**विमुक्तदुर्मतिः(स्) सदा शिरः(स्)स्थमञ्जलिं(व्ँ) वहन् ।**

**विलोललोल लोचनो ललामभाललग्नकः**

**शिवेति मन्त्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम् ॥ 13 ॥**

**इमं(म्) हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं(म्) स्तवं(म्)**

**पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।**

**हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं(म्)**

**विमोहनं(म्) हि देहिनां(म्) सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥ 14 ॥**

**पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं(म्)**

**यः(श्) शम्भुपूजनपरं(म्) पठति प्रदोषे ।**

**तस्य स्थिरां(म्) रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां(म्)**

**लक्ष्मीं(म्) सदैव सुमुखीं(म्) प्रददाति शम्भुः ॥ 15 ॥**

**॥ इति श्री रावण कृतं श्री शिव ताण्डव स्तोत्रं संपूर्णम्‌ ॥**